International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 14-11-2019; Accepted: 15-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 42-49

संताली लोकसाहित्य

Ankita Hembrom
M.A. in Santali (Department of Santali, Vidyasagar University, Jharkhand, India

सारांश
संताल समाज एक गणतांत्रिक, प्रकृिति पुजक एवं सहयोगिता पर आधारित समाज है। इनकी मुख्य जीविका कृषि है। इस समाज के लोग गॉवों में एकत्रवद्य होकर जीवन–यापन करते हैं । इनकी एक समाजिक व्यवस्था है, जिसे ष्मांझी पारगाना व्यवस्थाष कहते हैं। इनके गॉव के प्रधान ष्मांझीष कहलाते हैं। वे समाजिक रुप से समस्त ग्रामिणों के पिता होते हैं इसिलिये वे ष्मांझीबाबाष भी कहलाते हैं एवं उनके सहयोगी ष्पाराणिकष कहलाते हैं। गॉव के समस्त नवयुवक– नवयुवतियों को दिशा निर्देषित करने वाले ष्जगमांझीष, संदेशवाहक ष्गोडेतष एवं पुजारी ष्नायकेष कहलाते हैं। इन सबको मांझी मोंड़ेहोड़ भी कहते हैं। गॉव के समस्त समाजिक कार्यो में मोंड़ेहोड़ ;पंचोंद्ध की उपस्थिति अनिवार्य है जिनका संचालन ष्मांझीबाबाष करते हैं। मांझीबाबा की अनुपस्थिति में उनका कार्य उनके सहयोगी ष्पाराणिकष करते हैं ।
संताली लोकसाहित्य सदियों से ही मौखिक रुप से निरंतर चली आ रही है। यह निम्न रुपों में मिलता है–लोकगीतों, लोककथा, बिनती, सिंगराई, कुदुम, मेनकाथा; कहावते भेन्ताकाथा, पहेली इत्यादि। लोकगीत समाज के विभिन्न पुजा पर्व; बाहा, सोहराय, काराम एवं समाजिक अनुष्ठानों ;लांगड़े, बापला, दोड्ढ्द्ध में किया जाता है। संताली समाज के विधि–विधान से सम्बंधित जितने भी बाते या नियम हैं उन सब नियमो को समाज के लोग लोकगीतों के धागों में पिरोकर अपने नयी पिड़ियो के लिये संभालकर रखे हुए हैं। इसके अलावा भी अनेक प्रकार के गीत मिलते हैं, जैसे–गाड़ी नाच–गान जो मकर संक्रान्ति के समय, दॉसाय नाच–गान जो दुर्गा पुजा के समय किया जाता है। लोककथा दादा–दादी एवं नाना–नानियों के द्वारा बच्चों को सुनाये जाते हैं। बिनती और सिंगराई दोनो ही कहानी और गीत का संयुक्त रुप है। बिनती में संतालों के विश्वास अनुसार मानव सृजन के शुरु से लेकर उसका क्रमविकास इसी कहानी में रहती हैं। सिंगराई दो प्रकार के होते है–बीर सिंगराई, सॉवता सिंगराई। बीर सिंगराई में यौन शिक्षा से सम्बंधित कहानी सह गीत होती है जिसका अनुष्ठान शिकार के समय सुतान टांडी में किया जाता है। सॉवता सिंगराई में समाज के विधि–विधान से सम्बंधित कहानी सह गीत होती है जिसका अनुष्ठान विषेश अवसरों पर गॉव में या विभिन्न मंचो पर किया जाता है। संताली समाज में लोकसाहित्य की चर्चा सिर्फ मनोरंजन के लिये ही नही किया जाता है, बल्कि मनोरंजन के साथ–साथ नैतिक शिक्षा भी इसी के माध्यम से दिया जाता है। गॉव में या गॉव के बाहर जहॉ भी पुजा पर्व या मनोरंजक एवं शैक्षणिक अनुष्ठान होते है, जगमांझी का दायित्व होता है कि गॉव के समस्त नवयुवक – नवयुवतियों को उस स्थान पर लेके जाना एवं अनुष्ठान समाप्त होने पर उन्हें सही सलामत घर वापस पहुॅचा देना हैं। इससे लोकसाहित्य भी जिवित रहती है, नवयुवक–नवयुवतियों को नैतिक शिक्षा भी मिल जाती है और साथ–साथ उनका मनोरंजन भी हो जाता है। दुखः की बात यह है कि आधुनिक युग मे लोकसाहित्य की चर्चा लुप्त होती जा रही है। आधुनिक युग के नवयुवक–नवयुवतियों मे नैतिक शिक्षा सिखने की इच्छा नही हो रही हैं, बच्चे दादा–दादी एवं नाना–नानियो से लोककथाएँ नही सुन रहे हैं। इस शोध पत्र में यही दर्शाने की कोशिश की गयी है कि संताली लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककथा, बिनती, सिंगराई, कुदुम, मेनकाथा, भेन्ताकाथा की विशेषता क्या है, समाज में लोकसाहित्य का महत्व क्या था। यहॉ था इसलिये कहना पड़ रहा है क्योंकि वर्त्तमान मे इसका महत्व बहुत घट गया है। इस शोध पत्र में यह भी दर्शाने की कोशिश की गयी है कि संताली लोकसाहित्य आज के युग में अनदेखा क्यों किया जा रहा है, इसके लुप्त होने का कारण क्या है और इसको कैसे बचाया जा सकता है।

मूल शब्दः भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावनाः संताल जाति एवं समाज का सामान्य परिचय

श्संताल जनजाति भारत की प्रमुख तथा प्राचीनतम जनजातियों मे से एक है। जनसंख्या के आधार पर भारत मे यह दुसरे नम्बर पर है किन्तु प्रगतिशीलता और अनुशासन मे सर्वाधिक अनुशासित जनजातियों मे से एक है।श[1] संताल समाज के लोगों की भाषा 'संताली' है, तथा इनकी लिपि 'ओलचिकि' है। म्जीदवसवहनम स्ंदहनंहम व िजीम ूवतसक में संताली भाषा का स्ंदहनंहम ब्वकम है– ष्ैंज 639.3रुैंजष ;स्पूपेए ड ण् च्नसद्ध। संतालों की जनसंख्या पश्चिम बंगाल में 2280540;ब्मदेने.2001द्ध, झारखण्ड में 2879576;ब्मदेने.2001द्ध उड़ीसा में 699270 तथा असम में 242889 है। इन राज्यों के अलावा संताल बिहार, छत्तीसगड़, त्रिपुरा, मिजोरम मे तथा भारत से बाहर नेपाल एवं बंगलादेश में भी पाये जाते हैं। इनकी मुख्य जिवीका कृषि है। ये प्रकृति पुजक है, तथा इनका पुज्यस्थल 'जाहेरथान' है। संताल जनजातियों के कुछ भाग मिशनरियों के प्रभाव के कारण इसाई धर्म को अपना लिये हैं।

संताल समाज एक गणतांत्रिक समाज है। समाज मे जितने भी कार्य किये जाते हैं सब गणतांत्रिक प्रणाली मे किये जाते है। समाज के लोग एकत्रवद्य होकर गॉवो में निवास करते हैं। आधुनिक युग में शिक्षित संताल जो नौकरी के सिलसिले मे नगरों एवं शहरो मे रहतें हैं, वे वहॉ भी अपने समाज के लोंगों के साथ एकत्रवद्य होकर रहते है। संताल समाज में समस्त समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं न्यायिक कार्य समपन्न करने के लिये इनकी एक समाजिक व्यवस्था है जिसे 'मांझी–पारगाना व्यवस्था' कहते हैं। इस व्यवस्था को चलाने के लिये कुछ निर्वाचित पदाधिकारी होते हैं। गॉव के भ्मंक मांझी कहलाते हैं। वे समाजिक रुप से समस्त ग्रामीणो के पिता होते हैं एवं समस्त ग्रामीण उनके संतान, इसिलिये उनको मांझीबाबा कहते हैं। गॉव के समस्त समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं न्यायिक कार्यों में मांझीबाबा की उपस्थिति अनिवार्य है। मांझीबाबा की अनुपस्थिति मे उनका कार्य उनके सहयोगी पाराणिक करते हैं। अगर किसी कारणवश दोनो ही अनुपस्थित हो तब विशेष परिस्थिति मे

मांझीबाबा का कार्य उनके बेटे द्वारा सम्पन्न करवाया जाता है। गॉव के समस्त नवयुवक–नवयुवतियों के अच्छे चरित्र का निर्माण करने में उनकी सहायता करने की जिम्मेदारी जोगमांझी का होता है। वे इनके गाईड होते है।। जोगमांझी का दायित्व होता है कि गॉव के समस्त नवयुवक–नवयुवतियों को घर से नृत्य आखड़ा में, जाहेरथान में, विचार आखड़ा मे लेकर जाना एवं सही सलामत घर वापस पहुँचा देना। उन्हे अच्छे बुरे का ज्ञान देना, गलत रास्ते में जाने से रोकना। अगर कोई गलती करे तो उसे दण्डित करना। गॉव का संदेशवाहक षोडेतष एवं पुजारी ष्नायकेष कहलाते हैं।

संताली साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

संताली साहित्य अत्यंत साहित्य समृद्व है। संताली साहित्य अधिकांशतः अलिखित रुप मे है, और मुख्यतः यह अपनी मौखिक परंपराओं मे ही उपलब्ध है। संताली साहित्य में जीवन के भावों, विचारों, परिस्थितियों एवं घटनाओं का विषय मिलता है। संताली साहित्य दो भागों मे विभाजित किया गया है–होड़ सॉवहेत्;लोक साहित्यद्ध और ओल सॉवहेत्;लिखित साहित्यद्ध

संताली होड़ सॉवहेत ;संताली लोकसाहित्यद्ध– क्तण् ङ्ण्ब्ज्नकन के अनुसार श्होड़ सॉवहेत्;लोक साहित्यद्ध का शाब्दिक अर्थ है 'ग्राम के लोगों का ज्ञान' ।श्[2] संताली भाषा मे 'लोक' शब्द का अर्थ 'होड़' है अर्थात इससे मानव जाति का बोध होता है, और साहित्य शब्द का साधारण अर्थ है–दुसरों की भलाई करना। विद्वानो ने साहित्य को 'स हितम् साहित्यम्' भी कहा है, अर्थात दुसरों की हित या भलाई ही साहित्य है। अतः हम कह सकते है कि मानव जाति के भलाई के लिये जो है वही साहित्य है। संताली लोक साहित्य मे मानव की परंपरागत भावनाएँ एवं चेतनागत सभी अभिव्यक्ति का लेखा–जोखा निहित है। इसमें संताल जाति के विश्वास, रीति–रिवाज, कहानियॉ, कहावतें, संगीत, गीत, लौरी, मुहावरे, लोकाक्ति आदि आते हैं। संताली लोक साहित्य में संताली संस्कृति का भी एक अंग है। इसिलिये लोक साहित्य मे जातीय संस्कार, पुर्वजों की कथाएँ, बिनती, लोकाचार के रीति–रिवाजें, समाजिक व्यवस्थाएँ, पर्व–त्योहार, विवाह के गाथा, कथा, पहेलियॉ आदि पाये जाते हैं। संताली लोक साहित्य की ये सारी विधाएँ सदियों से लेकर वर्त्तमान समय तक शुशोभित करते आ रहे हैं। आधुनिक युग में बहुत सारी लोक तथ्य लुप्त होते जा रहे हैं या कहे इनकी चर्चा कम होती जा रही है।

संताली ओल सॉवहेत्; संताली लिखित साहित्यद्ध– साहित्य का इतिहास के बारे में अभी तक विद्वानो में मतभेद है।श्क्तण् ङ्ण्ब् ज्नकन के अनुसार लिखित साहित्य का आरंभ 1854 से हुआ है। सन् 1854 से पूर्व को लोकयुग या होड़ अवतार कहा जाता है।श्[3] क्तण् त्ंजद भ्मउइतंउ के अनुसार–संताली ओल सॉवहेत्;लिखित साहित्यद्ध का प्रारंभ उन्नीसवीं सदी के मध्य यानी 1845 ई. माना जाता है कयोंकि इसी साल श्रमतउपं चैपसपचे नें ष्।ष्दजंसप च्तपउमतष को लिखित रुप देकर प्रकाशित किये थे। इसके कुछ वर्ष बाद ठण्भ्ण्ठवकहवद ने 1848 में ष्जीम म्अम.त्पहपदंस वि ब्मदजतंस प्दकपंष नामक पुस्तक कलकत्ता से प्रकाशित किया था। 1850 में फिर श्रमतउपं चैपसपचे के द्वाराष्मुनंस जवष्दजंसप च्तपउमतष और 1852 मे ।द प्दजतवकनबजपवद जव ष्दजंसप स्ंदहनंहम और थ्वसासवतम वि ष्दजंस प्रकाशित किये थे। इसी प्रकार ळण्ब्ंउचइमसस नें 1866 मे ष्जीम म्जीदवसवहल वि प्दकपंष और म्ण्श्रण् डमद ने 1867 ई. मे ष्टदजंसपं दक जव ष्दजंसेष कलकत्ता से प्रकाशित कराये थे। इस प्रकार संताली ओल सॉवहेत्;लिखित साहित्यद्ध का प्रारंभ हुआ था। वर्त्तमान मे संताली भाषा साहित्य को विदेशी, एवं भारत के बंगाली, बिहारी, एवं संताली के कई लेखकों ने अपनी लेख से काफी समृद्व किया हैं ।

संताली लोकसाहित्य के रुप

A. लोकगीत– लोकगीत संताली लोकसाहित्य का एक बहुत महत्वपुर्ण अंग है।'लोकगीत ही लिखित साहित्य का आधार स्तंभ है।'[4] यह किसी न किसी पुजा, त्योहार या विशिष्ठ अनुष्ठान के साथ जुड़ा हुआ है। लोकगीत के साथ–साथ लोकनृत्य भी जुड़ा हुआ है। लोकगीत मनोरंजन के साथ–साथ नैतिक शिक्षा प्रदान करनेवाली साधन भी है। देवी–देवताओं को अराधना के लिये मंत्र पाठ भी एक प्रकार का लोकगीत ही है। लोकगीतों में संस्कार के कार्यों का वर्णना, संतालों का इतिहास, समाज प्रेम, भाई–बहन का प्यार, माता–पिता का प्यार का वर्णना भी मिलती है। लोकगीत पीड़ी दर पीड़ी संस्कारों की भॉति हस्तांतरित होती हुई लोकमानस के कंठ मे जिवित है। संताली लोकगीत निम्न रुपो मे मिलता है–बाहा गीत, सोहराय गीत, काराम गीत, दॉसाय गीत, झींका, झा़रनी, गिदरा़ बा़वली, छा़टिया़र गीत, बापला गीत, दोङ गीत, मोरना गीत, पाता गीत, लांगड़े गीत, गा़ड़ी गीत, कृषि कार्य के गीत इत्यादि।

1) बाहा गीत–यह गीत बाहा पुजा के समय गाया जाता है। बाहा संतालो के वर्ष का प्रथम पुजा है। यह संतालो का सबसे बड़ा एवं महत्वपुर्ण पर्व हैं। बाहा का अर्थ है–फुल। यह पुजा साल का फुल जब खिलता है अर्थात फाल्गुन महीन;मार्च महीने द्व में किया जाता है। इस पुजा मे साल एवं महुआ का फुल देवी–देवताओं के समक्ष अर्पण किया जाता है। यह बाहा उत्सव तीन दिन का होता है। प्रथम दिवस 'उम नाड़का माहा'–इस दिन जाहेरगाड़ के समस्त देवी–देवताओं के स्थान की साफ–सफाई करके गोबर के लेपन एवं मेथी के लेपन से पवित्र किया जाता है। शाम के समय नायकेबाबा के आंगन मे रुम डाकाव होता है। द्वितीय दिवस 'सा़रदी माहा'–इस दिन बाहा पुजा का समस्त कार्य सम्पन्न होता है। तृतीय दिवस 'सेंदरा;शिकारद्ध माहा'–इस दिन शिकार किया जाता है। इन तिन दिनो के बाहा उत्सव मे जितने भी कार्य किये जाते हैं प्राय सब कार्य के साथ लोकगीत गाया जाता है। एक गीत नीचे दिया जा रहा है–

श्ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।2।
जा गोंसाय तोकोय मेंदोय राकाब् आकान?
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय चिंकां़ड़ चॉदोय राकाब् आकान,
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय तोकोय मेंदोय उपेल आकान?
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय जाहेर आयोय उपेल आकान,
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय तोकोय मेंदोय उपेल आकान?
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय मोंड़ें कोको उपेल आकान,
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय तोकोय मेंदोय उपेल आकान?
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां।
जा गोंसाय तुरुय कोको उपेल आकान,
ओतमा डिगिर–डिगिर हाले सेरमा बारां–बारां। [5]

अर्थ–किसके उठने से धरती मे धुल उड़ रहें हैं और आकाश लाल हो गए है? उत्तर मिलता है कि मश्हीन ; चिकना द्व सुर्य भगवान, tाहेर आयो, मोंड़ेको एवं तुरुयको उठें हैं इसिलिये धरती में धुल उड़ रहें हैं और आकाश लाल हो गए हैं।

2) **सोहराय गीत–** यह गीत सोहराय पुजा के समय गाया जाता है। सोहराय पुजा संतालों का दुसरा बड़ा एवं महत्वपुर्ण पर्व है। यह पर्व गाय–बैलों को सारहाव;प्रोत्साहितद्ध, उनका आभार व्यक्त करने वाला पर्व है। यह पर्व सोहराय महीना यानि काली पुजा इर्द गिर्द होता है। संताल परगना और पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिला के छातना अंचल से लेकर बिरभुम, मुरर्सिदाबाद तक यह पुजा जनवरी में किया जाता है। यह पर्व उड़िसा, झारखंड के सिंहभुम जिला और पश्चिम बंगाल के बाकुड़ , पुरूलिया और मिदनापुर में तिन दिन एवं संताल परगना अंचल मे 5 दिनो तक मनाया जाता है। प्रथम दिवस 'गोट बोंगा'–इस दिन गाय–बैलों के झुंड को जहॉ चराया जाता है वहॉ गोट पुजा होता है। दुसरा दिन 'दाकाय माहा'–इस दिन गाय–बैलों के लिये सर्मथानुसार पीठा बनाकर एवं अनाज खिलाये जाते हैं। इस दिन गाय–बैलों के 'आतां–दाराम';शुभ–आगमनद्ध का कार्य भी किया जाता है। तृतीय दिन 'आड़ाग् माहा' या 'खुंटाव माहा'। इस पर्व में समस्त गाय–बैलों को अच्छे से नहला धुलाकर तेल लगाया जाता है एवं चुमावन किया जाता है। इस पर्व में गाय–बैलों से कोई भी कार्य नही करवाया जाता है। इन तिन दिनों के सोहराय उत्सव में जितनें भी कार्य किये जाते हैं प्राय सभी कार्यों के साथ लोकगीत गाया जाता है। गाय बैलों के चुमावन के गीत, गाय बैलों के जागरण के गीत, खुंटाव करने के गीत, रास्ते मे भ्रमण करने के गीत, सोहराय निमंत्रण गीत, खुशियाली के गीत, दुख के गीत इत्यादि। गाय बैलों के चुमावन का एक गीत प्रस्तुत किया जा रहा है–

श्नावा हाटाग् नायो किरिञ आञ मे।2।
निञ दुञ चालाग् नायोगो कुल्ही दॉड़ान।
कुल्ही दॉड़ान नायोगो मांझीको नोड़ाग्।
मांझीको नोड़ाग नायोगो गायको चुमावड़ा
निञ दुञ चालाग् नायोगो पाराणिक नोड़ाग्,
पाराणिक नोड़ाग् नायोगो काडाको चुमावड़ा।श्[6]

उक्त गीत में कहा गया है कि युवती अपनी मॉ से कहती है कि मॉ मेरे लिये नया सुप खरीद दो, क्योंकि मैं चुमावन के लिये कुल्ही घुमने निकलूंगी। मॉ मैं मांझी एवं पाराणिक के घर गाय भैंसों को चुमावन के लिये जाउॅगी। प्राय संताल समाज में कोई भी चुमावन का कार्य नये सुप में दूर्बा घांस, आरवा चावल, दीपक या सुलताबाती से किया जाता है। इसिलिये युवती भी अपनी मॉ से नया सुप खरीदने के लिये कहती है।

3) **काराम गीत–**काराम गीत काराम पुजा के समय गाया जाता है। काराम पुजा संतालों का कृषि से जुड़ा हुआ पुजा है। काराम देवता अन्न–धन देनेवाले देवता है। यह पुजा राखी पुर्णिमा, सोहराय एवं माक् मोंड़ें के अवसर एवं अगहन में पुजा किया जाता है।

4) **दॉसाय गीत–**दॉसाय नृत्य गीत संतालों का ऐतिहासिक नृत्य गीत है। इसे पर्व तो नही कहा जायेगा क्योंकि इतिहास मे यह नृत्य गीत विशेष अभियान के लिये किया गया था। दॉसाय आयनम, काजल , देवी एवं दुर्गा को खोजने के लिये बहरुपि सज–धजकर किया गया एक अभियान था। उसी इतिहास को याद करने के लिये आज भी संताल समाज के लोग आश्विन महीने ;दुर्गापुजा के इर्द गिर्द द्धमे दॉसाय नृत्य गीत करते है। एक दॉसाय गीत नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है–

ष्हायरे–हाय देवीरे दुर्गा दो किन ओडोक एना रे,
आयन–काजल दो किन बाहेर एना रे।
हायरे–हाय चेते लागिद् दो किन ओडोक् एना रे?
चेते लागिद् दो किन् बाहेर एना रे?
हायरे–हाय देश लागिद् दो किन ओडोक् एना रे?
दिशोम लागिद् दो किन् बाहेर एना रे?
हायरे–हाय ओका दिशोम तेकिन ओडोक् एना रे?
तोका दिशोम तेकिन दो किन् बाहेर एना रे?
हायरे–हाय सुनुमें सिंदुर गुरु हो देसे आंड़गोय में,
खाड़ी–खुन्टी आते दिसा आबोन मे।
हायरे–हाय दिवी दुर्गा दो किन सेटेर गोदोक् मा,
आयनम काजल दो किन उपेल गोदोक् मा।
हायरे–हाय देलासे दिवी दुर्गा होय लेकाते,
देलासे आयनम काजल बारडू लेकाते।
हायरे–हाय ओटां हिजुक् पेसे सेरमा सांगिञ खोन,
गुरलाव हिजुक् पेसे सेरमा पाताल खोन।श्[7]

उक्त गीत मे कहा गया है कि दिवी, दुर्गा, आयनम, काजल निकले। आगे पुछा गया है कि वे किसलिये निकले? उत्तर मिलता है कि वे देश के लिये निकले। पुन प्रश्न किया गया है कि वे कौन सी देश गऐ हैं ? फिर कहा गया है कि सिंदुर–तेल से गुरुबाबा पुजाकर उसमे देखें । देवी–देवता के सहयोग से दिवी, दुर्गा, आयनम, काजल सब हवा या बवंडर के रुप में स्वर्ग या पाताल से चले आवे।

5) **झींका–**संताल समाज मे दोङ, लांगड़े, पाता बारहमासी नृत्य गीत है। बाहा, सोहराय, काराम, दॉसाय आदि समसामयिक नृत्य गीत है। प्राय प्रत्येक नृत्य गीत के समापन के समय झींका नृत्य गीत किया जाता है।

6) **झारनी–**झारनी विशेषकर गुरु–चेला लोग ही जानते हैं। साधारण लोग इसे नही जानते है। झारनी मंत्र का ही एक अंग है, इसे गुरु–चेला के द्वारा देवी–देवताओं को आवाहन करने के लिये गाये जाते है। लोग किसी के मानसिक अशान्ति के समय उसे दुर करने के लिये भी झारनी करते है।

7) **गिदरा बावली;लोरियॉद्ध–**सामान्यतः यह बच्चों को सुलाने के लिये एवं रोते हुए बच्चों को चुप कराने के लिये स्त्रियों द्वारा गायी जाती है। कभी–कभी हठी बच्चा को फुसलाकर खाना खिलाने के लिये भी उपयोग किया जाता है। प्यार भरी थपकिया के साथ बच्चों को सुलाने और बहलाने के ये गीत शिशु के मानसिक और शारिरीक विकास करते हैं। कुछ लौरी नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है–

इस गीत में शिकार के पश्चात संताली जनमानस की आर्थिक दुर्दशा का भी उल्लेख मिलता है

कोंग् माले गोज् केदे
सुनूम बुलूं बानुः ताले
चेद् तेले रोङ छोंगेया।

उक्त गीत में कहा गया है कि हमलोगों ने बगुला तो मार लिया परन्तु उस बगुले के मांस को पकाने के लिये हमारे पास तेल–मसाला आदि नही है। तेल के बिना कैसे भुना जायेगा।
बच्चा जब रोने लगता है तो उसके कांख मे हाथ देकर उसे हंसाने की चेष्टा की जाती है–

राक् मोचाय लांदा केद्,
हाड़ाम सेताय फांदा केद्,
कुतुल काग्–काग्–काग्।

इस गीत का भावार्थ है कि रोने वाले हंस पड़े तथा बुड़ा कुत्ता भी पैर हिलाये ।

8) छाटियार गीत–संताल समाज में छाटियार दो प्रकार के हैं–एक जानाम छाटियार / छुतफेड़ाव ;छुत्तोद्धारद्ध और दुसरा चाचो छाटियार ;नामकरणद्ध दोनो छाटियार के समय गीत गाये जाते हैं। संताल समाज मे नीम का वृक्ष जनमोपरान्त छुतोद्धार के लिये बहुत महत्वपुर्ण स्थान रखता हैं। छुतोद्धार के समय सबके लिये 'नीम दाक्मांडी' ;आरवा चावल का मांड़भात जिसको पकाते समय नीम की पत्ती डुबो दी जाती हैद्ध बनता है, जो मॉ के शरीर को रोगमुक्त एवं संतुलित बनाये रखता है। इसी कारण जानाम छाटियार ;छुत्तोद्धारद्ध गीत मे नीम का महत्व प्रस्फुटित हो उठता है–

" ओकोयाक् राचा रे नीम दो ?
हिपिड़–हिपिड़ नीम दो–नीम दारे दो ।
मुर्मू कोवाक् राचा रे नीम दो
हिपिड़–हिपिड़ नीम दो नीम दारे दो ।
तोकोय ए रोहय लेद्आ नीम दो ?
हिपिड़–हिपिड़ नीम – नीम दारे दो ।
तोकोय ए जोतोन लेग् आ नीम दो ?
हिपिड़–हिपिड़ नीम दो – नीम दारे दो ।
बाबाय रोहोय लेग् आ नीम दो
हिपिड़–हिपिड़ नीम दो – नीम दारे दो।
नायोय जोतोन लेग् आ नीम दो
हिपिड़–हिपिड़ नीम दो – नीम दारे दो ।"[8]

अर्थात किसके आंगन में नीम वृक्ष है। मुर्मू ;फालनाद्ध के आंगन मे नीम वृक्ष है किसने नीम वृक्ष लगाया तथा किसने उसकी देख–भाल की ? उत्तर मिलता है कि पिता ने लगाया एवं माता ने ही देख–भाल की है । माता–पिता नीम की भावी आवश्यकता को देखते हुए नीम को आंगन मे लगाये गए थे। आंगन मे नीम वृक्ष का होना शुद्ध वातावरण मे जीवन व्यतीत करना हुआ होता है। यह लोक–जीवन में शिशु का प्रतीक स्वरुप है तथा शिशु का भावी जीवन सुखी होने का लोक विश्वास है।

9) बापला गीत ;शादी के गीतद्ध एवं दोङ गीत–ये दोनो ही शादी के समय गाये जाते हैं। बापला गीत सामान्यतः बापला के रिति–रिवाज से सम्बंधित गीत होते हैं, जो शादी के रस्म सम्पन्न होने के समय गाया जाता है। दोङ शादी के समय किया जानेवाला नृत्य गीत है। संताल समाज में विवाह की कई पद्धतियॉ हैं,जैसे–दुवार इतुद् सिंदुर बापला ;दिकु विवाहद्ध कोंडेल आपाम से दुलाड़ बापला;प्रेम विवाहद्ध, दोल बापला, टुंकी दिपील बापला, हाड़ाम बारयात बापला, गोलायटी बापला;आदान–प्रदान विवाहद्ध, घारदी जांवाय बापला;घर जामाई विवाहद्ध, सांघा बापला;विधवा या छाडरी विवाहद्ध। दुवार इतुद् सिंदुर बापला ;दिकु विवाहद्ध को ही सर्वोत्तम विवाह पद्धति माना गया है, क्योंकि पद्धति मे विवाह सबकी सहमती से होता है एवं विवाह के सारे रस्म सम्पन्न किये जाते हैं।

संताल समाज मे सिंदूरदान सुर्योदय के समय शुभ माना जाता है। विवाह रस्म के सिंदूरदान के समय वधू की व्यथा भरी मनोभाव का एक गीत प्रस्तुत किया जा रहा है–

"चॉदोय राकाब् कान पिरिच्–पिरिच्,
इञिञ देजोक् कान दावड़ा चेतान।
दावड़ा चेतान खोनिञ कोयोग् लेद् आ,
ओकायेनापे गाते कुड़ी।
गाते कुड़ी दोले चेकामेया,
मोंड़े गोटेज् उल साकाम मिद् लोटा दाक्,
दिशोम पेड़ा रेकिन आलाय केद् में।"[9]

इस गीत में वधु स्वयं कहती है कि जिस समय धीरे–धीरे सुर्योदय हो रहे है उसी समय मैं;वधूद्ध दौवड़ा में चड़ रही हूँ। दौवड़ा के उपर से मैं झांकी कि कहॉ गयी तुम सारी सखि–सहेलियॉ। तब सखियॉ जबाब देती है कि अब हम तुम्हारा क्या कर सकते हैं। तुम्हारे माता–पिता तुमको देश के मेहमानों के बीच दे दिये हैं। अब तुम अपने जन्मदाता की नही रह गयी हो।

दोङ गीत– दोङ विवाह के समय खुशियॉ मनाने के लिये किया जानेवाला नृत्य गीत है। जीवन मे गीत के महत्व को एक दोङ गीत में इस प्रकार से वर्णन किया गया है–

सेरेञ दोम जोमासे ञुया?
सेरेञ दोम लादा से रापागा?
सेरेञ दो मोने रेगे सिबिला,
सेरेञ दो सेरेञ हापाटिञ।

इस गीत का भावार्थ है कि गीत को न खाया जाता है, और न पीया जाता है न उसे आग मे पकाया जाता है। गीत तो मन ही में अच्छा लगता है, गीत तो गाकर एक दुसरे की खुशियॉ बॉटे जाते है। अर्थात गीत मन बहलाने के लिये गायी जाती है। उसे मिलजुलकर गाकर खुशियॉ महसुस की जाती है।

एक अन्य दोङ गीत मे ऋतु परिवर्त्तन का वर्णन किया गया है–

दारे साकाम हों पालोयेना,
मात्कोम ञुरुक् हों एहोप् एना,
नुमिन खान गे होड़ दोको मेना,
होय लोलो दिन दो सेटेर एना।

भावार्थ यह है कि वृक्ष के पत्ते पीले पड़ गये, महुआ गिरना भी शुरु हो गया। ये सब देखने से ही मनुष्य कहा करते हैं कि ग्रीष्म का ऋतु आ गया है।

10) मोरना ;मृत्युद्ध गीत– यह गीत मृत्यु–संस्कार के समय गाया जाता है। यह गीत करुण स्वर या रो–रोकर गाया जाता है ।

11) लॉगड़े गीत–लॉगड़े संतालों का बारहमासी नृत्य गीत है। इस नृत्य गीत का विशेष महत्व है। लॉगड़े का शाब्दिक अर्थ है–'लॉगा एड़े' ;थकावट को दुर करना ६ भुलादेनेवालाद्ध करनेवाला नृत्यगीत। संतालों का मुख्य पेशा कृषि है। वे दिनभर अपने खेतों मे काम करके थक जाते हैं। इसी थकावट को भुलादेने के लिये वे हॅड़िया पीकर नृत्य एवं गीत करते हैं, और खाना खाकर सो जाते थे क्योंकि उन्हें अगले दिन फिर खेतो में काम करने जाना होगा। संतालों को यह पता था कि थकावट को खत्म नही किया जा सकता है क्योंकि यह रोज की बात है, इसिलिये वे थकावट को भुलादेने के उपाय निकाले।

मनुष्य का सौंदर्य क्षण–भंगुर है। यौवनावस्था मे ही सौंदर्य खिला रहता है। उसे सदा ;चिरकालद्ध स्थायी नही रखा जा सकता है। इसी सौंदर्य के सम्बन्ध मे लॉगड़े गीत नीचे प्रस्तुत किया जा है–

"दिन दो चालाक् दिन दो रुवाड़ा,
रुप दो चालाक् रुप दो बाय रुवाड़ा।
कांसा पितोल रेसेद्–बाटी लोटा रेसेद्,
रुप दो हुनाङ इञ दुल रुवाड़ ओचोय।"[10]

इस गीत मे उल्लेख है कि किसी को अपना रुप का निखार चले जाने का बोध होता है और तब वह कहता है कि दिन के चले जाने से दिन लौटकर आता है पर रुप के चले जाने से वह नही लौटता। यदि रुप भी कांसा पितोल होता या लोटा बाटी होता तो मै फिर से गलाके ढलवाता।

12) पाता–पाता संतालों का बारहमासी नृत्य गीतों मे से एक है। यह दो व्यक्तियों, दो परिवारो या दो समुहो के बीच मेल या मिलन से बना है। यह समाजिक नृत्य गीत तो नही है पर नवयुवक–नवयुवतियों के आपस मे मिलने का एक मिलन अखड़ा है।

13) गा़ड़ी गीत–संताल समाज के लोग पौष संक्रान्ति मे बडी धुमधाम से साकरात ;मकर संक्रान्तिद्ध मनाते हैं। साकरात ;मकर संक्रान्तिद्ध में नौकर–चाकरों को नये कपड़े, खान–पान देकर प्रोत्साहित किया जाता है। यह पर्व में पकवान खाने के बाद नौकर–चाकर दो–तिन दिनों तक स्वतंत्र महसुस करते हैं। खान–पान के बाद खुशी से गा़ड़ी नाच किया जाता है। इस नाच में लड़के, लड़कियों का वेष बदलकर घर–घर जाकर नाचते हैं। गा़ड़ी गीत मे जागृति सम्बन्धी आवाज का किस तरह से वर्णना किया गया है वह नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है–

श्जा़पिद् आकाद् बोयहा हो बेरेद् पे से मा,
इड़िंज् आकान बा़ती दो जेरेद् पे से मा,
झारखण्ड दिशोम दो राकाब् पे से मा,
छोटनागपुर बोयहा रोफाय पे से मा।
दुख कानास मुचा़द् पे से मा,
जांगे दाराम साहाय पे से मा,
ताहाव–ताहाव ते दिशोम लाहाय पे से मा।श[11]

गीत में कहा गया है कि सोये हुये सब लोग उठो जागो, बुता हुआ बत्ती को जलाओ, झारखण्ड का उत्थान करो, छोटनागपुर की रक्षा करो। दुखः दर्द को मिटाओ, बाधा–विघ्न को दुर करो और देश को आगे बढ़ाओ। यानी जाति समाज क्षेत्र एवं देश के उत्थान मे लग जाओ, तभी हम सर्वागीण विकास मे सफल हो पायेगे।

14) श्रम सम्बन्धी गीत–भारत कृषि प्रधान देश है। संताल समाज के लोगों का मुख्य जीविका कृषि ही है। संताल समाज के स्त्रियॉ खेतो मे काम करते समय भी गीत गाकर मनोरंजन करती है। वे मुख्यतः रोपने के काम एवं निकौनी के काम करते समय गीत गाती है। रोपनी के समय का एक गीत नीचे प्रस्तुत किया जा है–

चेतान बा़यहाड़ हों चेहेल–चेपेल,
लातार बा़यहाड़ हों चेहेल–चेपेल।
लुबुय–लुबुय पोहा रोहोय एदाको चा़सी बोयहा,
चास का़मी रे चा़सी दोको माताव आकान।

इसमें कहा गया है कि उपर एवं नीचे दोनो खेत मे पानी भर गया है। कृषक कौमल पौधा को उठाकर लगा रहा है, और वे कृषि के कार्य मे मग्न हुये है।

15) बिनती–बिनती कहानी और गीत का मिश्रण रुप है। बिनती मुख्यतः बिनती गुरुओ द्वारा उपदेश की तरह अपने भक्तो को सुनाया जाता है। बिनती मे देवी–देवताओं एवं धरती सृजन से सम्बन्धित कहानियॉ होती है। हिन्दु धर्म मे जो स्थान रामायण और महाभारत का है वैसा ही स्थान संताल समाज मे बिनतियों का है। संताली मे निम्न प्रकार की बिनतियॉ पायी जाती है–जोमसिम बिनती, छा़टिया़र बिनती, बापला बिनती, भांडान बिनती, काराम बिनती एमान–एमान।

16) सिंगरा़ई–बिनती और सिंगरा़ई दोनो ही कहानी और गीत का मिश्रण रुप है। बिनती गुरुओ द्वारा उपदेश की तरह अपने भक्तों को सुनाया जाता है और सिंगरा़ई लोककलाकारों द्वारा अभिनय करके दिखाया जाता है। सिंगरा़ई दो प्रकार के हैं–सॉवता सिंगरा़ई एवं बीर सिंगरा़ई। सॉवता सिंगरा़ई मे समाज से सम्बन्धित कहानियॉ होती है जिसका आयोजन गॉव मे कहीं भी किया जा सकता है। इसमे पुरुष–स्त्रियॉ दोनो ही भाग ले सकती हैं। बीर सिंगरा़ई में यौन शिक्षा से सम्बन्धित कहानियॉ होती है जिसका आयोजन शिकार के समय सुतान टॉड़ी मे किया जाता है। इसमे पुरुष ही भाग ले सकते हैं स्त्रियॉ नही।

B. लोककथा–संताली लोकसाहित्य के समृद्वशाली भंडार मे लोककथाओं का विशेष स्थान है। लोककथा लोकजीवन मे सदियों से परंपरागत रुप से चली आ रही है। लोककथा एक और जहॉ समाज से मनोरंजन का साधन है वही दुसरी और शिक्षण का भी साधन है। श्लोकसंस्कृति के अध्येता डॉ सत्येन्द्र का कहना है–बहुत सी लोककथाएँ महज मनोरंजन के लिये होती है, किन्तु अन्य बहुत सी मुलतः शिक्षा के लिये गड़ी गयी है। वास्तव में कथा की ऐसी मौखिक परंपरा जिसमे जनमानस के तत्व विशेष रुप से उपलब्ध हो एवं उनका उद्वेश्य जनमनोरंजन तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से ज्ञानवर्द्धन हो वही लोककथा मानी जा सकती है।श[12] लोककथाएँ ही जीवन की पहली पाठशाला होती है, जिसे सुन–सुनकर वह व्यस्क होता है। इनमें शिक्षा, सुचना, भय, और मनोरंजन का अद्भुद् संसार समाया हुआ है। संताली लोककथाएँ निम्न प्रकार की पायी जाती है–

1) व्रत त्योहार सम्बन्धी कथाएँ
2) हास्य कथाएँ
3) पशु–पक्षी कथाएँ
4) समाजिक–परिवारिक कथाएँ
5) नीति कथाएँ
6) परी कथाएँ
7) कारण निरुपक कथाएँ
8) प्रकीर्ण कथाएँ

C. कुदुंम;पहेलीद्ध– संताली समाज मे पहेली का भी विशष महत्व है। पहेली के भी दो प्रकार है–काथा;कथा/गद्यद्ध और सेरेञ;गीत/पद्यद्ध। गद्य पहेली किसी भी समय किया जाता है और पद्य विशेष अवसर मे किया जाता है। विवाह के समय बारातियों को गीत के माध्यम से प्रश्न पुछा जाता है।

गद्य पहेली

कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्
गाडा–गाडाते फाल तोपा?
उत्तर– दुंड़ी हाकु
;कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्–नदीमें फाल दफनाया हुआ है? उत्तर–दुंड़ी मछलीद्ध
कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्
गाडा–गाडाते बा़टी हारुब्?
उत्तर –होरो
;कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्–नदी मे बाटी पल्टी करके रखा हुआ है? उत्तर–कछुआद्ध

कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्
मिद्टां बुड़ही पेया ताय बोहोग्?
उत्तर –चुलहा
;कुदुम रे कुड़ीद्–कुड़ीद्–एक बुड़िया जिसके तीन सर? उत्तर–चुल्हाद्ध

पद्य पहेली
श्चेतान रेमा हिरा़मा़निक
इना़ लातार रेमा रिड़िम दाः
ओना भीतरी रेमा सोना डुंबूः
;उपर मे हिरा़मा़निक, उसके नीचे पानी, उमके अन्दर सोने का गोला । उत्तर –अंडा द्ध

D. मेनकाथा; लेकोक्तिद्ध–सामान्यतः लोकोक्तियॉ शिक्षा मुलक बातें होती है। इसका उपयोग बड़े–बुजूर्ग किसी को समझाने के समय करते है। लोकोक्तियॉ मौखिक रुप से समाज मे पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर चली आर रही है। संताली के कुछ लोकोक्तियॉ नीचे दी जा रही है–

1. 1ण्श्ढिंकी बुटा़म सेनोक् रेसे लोबोः खदे दम जोमा।
2. चेतान रे रङ चों, भीतीर रे भीदोरभोङ।
3. खाटावलेन खानेम चाटावा, लाड़ावलेन खानेम पाड़ावा।
4. श्ओका लेकाम एरा, ओना लेकाम इरा।
5. ओका रेगे चास अन्डेगे बास।
6. ओका लेकान बोंगा ओनका लेकागे सेबा हुयुग् आ।

E. भेन्ता काथा;मुहावरेद्धः सामान्यतः मुहावरे भी शिक्षा मुलक बाते होती है। इसका उपयोग बड़े–बुजूर्ग किसी को समझाने के समय करते हैं। लोकोक्तियॉ की बाते सीधी होती है पर जब बात को घुमा–फिराकर कहने की जरुरत पड़े तब मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। मुहावरे मौखिक रुप से समाज मे पीढ़ी दर पिढ़ी निरंतर चलती जाती है। संताली के कुछ मुहावरे नीचे दी जा रही है–

1. अड़ाः ढिंकी तायान– आपनार हड़गे बा़यरी –घर की भेदी लंका दाह
2. आराः पुंड बेंगेद्–एद्रे उदुक्–ऑखे लाल सफेद दिखाना
3. चेतान दाक् हाकु–खाटो आ़किलान हड़/कम बुद्वि वाला आदमी

संताली लोकसाहित्य की विशेषताएँ

- संताली लोकसाहित्य की उत्पत्ति जुरुः;आंटी सेंकनाद्ध से हुआ है।
- संताली लोकसाहित्य मे समसामयिकता की प्रधानता रहती है।
- संताली लोकसाहित्य आदिकाल से चली आ रही मौखिक परंपरा है, जिसमे संताल समाज की संस्कृति की, रस्म–रिवाज की, इतिहास का वर्णना मिलता है।
- संताली लोकसाहित्य के रचयिता का नाम पता नही होता क्योंकि यह व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति नही है सम्पुर्ण समाज की सम्पत्ति है।
- संताली समाज में लोकसाहित्य की चर्चा लोककलाकार जिविका चलानें के लिये नही ब्लकि समाज की सेवा, समाज के हर वर्ग के लोगो तक नैतिक ज्ञान को पहुॅचाने, संस्कृति को बचाने के साथ–साथ मनोंरंजन करने के लिये करते है।
- ऐसा भी देखने को मिलता है कि लोककलाकार नये–नये लोकगीतो की रचना करके लोकसाहित्य के भंडार को समृद्व करते है, किन्तु उन्हे अपना नाम नही जोड़ते हैं ।
- संताली लोकगीतों में बंगला भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है।

संताल समाज में लोकसाहित्य का महत्व एवं उपयोगिता–

संताल समाज में लोकसाहित्य का महत्व एवं उपयोगिता की वर्णना नीचे दी जा रही है–

1. **थकावट का निवारण करने के लिये** –हर इंसान अपनी जिविका चलाने के लिये कुछ ना कुछ जरुर काम करता है। दिनभर मेहनत करके जब वह शाम को थकाहारा घर वापस आता है तो उसे थकावट से छुटकारा दुर करनें के लिये उपचार की जरुरत होती है। संताल समाज के लोगों को यह बहुत पहले पता था कि थकावट को खत्म नही किया जा सकता है, उसको सिर्फ भुलाया जा सकता है। इसी थकावट का उपचार करनें के लिए उन्होने लॉगड़े नृत्य गीत का अविष्कार किया। इस उपचार की पद्वति मे– हंड़िया पीकर/नशा पान करके नृत्य गीत किया जाता है। इस प्रकार नशा पान करके लॉगड़े नृत्य गीत करने से वे इतना आनन्दित हो उठते हैं कि अपनी सारी दुखः–दर्द भुल जाते हैं। इसके बाद वे खाना खाकर आराम से सो जाते हैं ताकि अगले दिन सुबह उठकर अपने खेतो मे काम करने जा सके। इस प्रकार हमने देखा कि संताल समाज मे लोकसाहित्य की चर्चा थकावट निवारण करने के लिये भी होता है।
2. **मनोरंजन करने के लिये**– मनुष्य के जीवन में मनोरंजन बहुत ही जरुरी होता है। मनोरंजन का सबसे सरल उपाय है–नृत्य गीत करना। संताली लोकसाहित्य में जितने भी नृत्य गीत है कुछेक को छोड़कर सबसे मनोरंजन होता है। वह कुछेक है–मंत्र पाठ, देवी–देवताओं को अराधना के गीत बिनती, मोरना के गीत दुखः के गीत इत्यादि। इस प्रकार संताल समाज मे लोकसाहित्य की चर्चा मनोरंजन करने के लिये भी होता है ।
3. **समाज के नये पिढ़ीयों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिये–** संताल अपने आप को 'होड़' कहकर संबोधित करते हैं । 'होड़' शब्द का अर्थ होता है –'मानव' । कोइ भी इंसान जन्म से ही 'होड़' नही कहलाता है, जब वह होड़ के सारे गुण अर्जित कर लेता है तब वह होड़ कहलाता है । इस समाज मे नवयुवक –नवयुवतियों को होड़ बनाने की शिक्षा दी जाती है ।

संताल समाज मे सारे शिक्षा मौखिक और प्रयोग पर आधारित होते हैं । पुरा समाज एक शिक्षण संस्थान है । इस समाज मे सारे नवयुवक–नवयुवतियों को समाज मे परिपक्व व्यक्तियों के संपर्क मे रखकर या उन्हे देखकर और खुद प्रयोग करके सिखया जाता है । शिक्षण के संबंध मे यही बात मौरीसन ने कहा है कि शशिक्षण एक परिपक्व तथा कम परिपक्व व्यक्ति के मध्य आत्मीय संबंध है जहॉ कम परिपक्व को शिक्षा की ओर अग्रसित किया जाता है ।श[13] गेज ने भी इसी बात को अपने शब्दो मे कहा है कि शशिक्षा एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्वेश्य है दुसरे व्यक्तियों के व्यवहारों मे अपेक्षित परिवर्तन लाना ।श[14] समाज मे सब वृद्वजनो के साथ रहकर उन्हे अनुकरन करके तथा खुद कार्य करके सिखते है । यह शिक्षा समाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक होता है । इन नवयुवक–नवयुवतियों को पथ प्रदर्शक या सहायता करने वाले होते हैं जिसे जोगमांझी कहा जाता है । जोगमांझी इन नवयुवक –नवयुवतियों को हर प्रकार से शिक्षा प्राप्त करने मे सहायता करते हैं। शिक्षण के सम्बन्ध मे ऐसी ही बात रियान्स ने कही है कि– श्दुसरों को सिखने के लिये दिशा निर्देश देने एवं अन्य प्रकार से उन्हे निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं।श[15] ॅवतसक ठववा म्दबलबसवचमकपं मे भी शिक्षण की परिभाषा दी गयी है कि–

श्शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, तथा अभिरुचियों को सिखने या प्राप्त करने मे सहायता करता है।श्[16] यही सहायता करने का काम, जगमांझी का होता है। गॉव मे या गॉव के बाहर जहॉ भी पुजा पर्व या मनोरंजक एवं शैक्षणिक अनुष्ठान हाते है, जगमांझी का दायित्व होता है कि गॉव के समस्त नवयुवक–नवयुवतियों को उस स्थान पर ले के जाना एवं अनुष्ठान समाप्त होने पर उन्हे सही सलामत घर वापस पहुॅचा देना। जोगमांझी का दायित्व होता है कि गॉव के समस्त नवयुवक–नवयुवतियों को घर से नृत्य आखड़ा मे, जाहेरथान मे, विचार आखड़ा मे लेकर जाना एवं सही सलामत घर वापस पहुॅचा देना। उन्हे अच्छे बुरे का ज्ञान देना, गलत रास्ते मे जाने से रोकना। अगर कोई गलती करे तो उसे दण्डित करना।

उपर वर्णित तथ्यो से यह पता चलता है कि जोगमाझी की निगरानी में गॉव के समस्त नवयुवक–नवयुवतियॉ नैतिक शिक्षा अर्जित करते हैं। अब सवाल यह उठता है कि उनका मौखिक पाठ्यक्रम क्या है? उनका मौखिक पाठ्यक्रम है–लोकसाहित्य। यह ज्ञान उन्हे लोकगीत, लोककथा, बिनती, कुदूम, मेनकाथा, भेन्ताकाथा के माध्यम से सिखाया जाता है। आधुनिक शिक्षा के युग मे लोकसाहित्य को उतना महत्व नही दिया जा रहा है जिसके कारण नवयुवक–नवयुवतियों मे नैतिक ज्ञान का अभाव देखने को मिलता है।

1ण **देवी–देवताओं को अराधना करने के लिये**–संताल समाज के लोगों का मुख्य पेशा कृषि है। कृषि पर निर्भर होकर ही ये अपना जीवन व्यतीत करते हैं। कृषि कार्य मुख्यतः वर्षा के पानी पर निर्भर होता है। कभी–कभी बारिश न होने के कारण कृषि कार्य मे बाधा पहुॅचती है। ऐसे वक्त मे संताल समाज के लोग धोरोम आखड़ा मे लॉगड़े नृत्य गीत के माध्यम से देवी–देवताओं की अराधना करते हैं। ऐसा भी सुना गया है कि नृत्य गीत करने से भारी वर्षा भी होती थी।

2ण **संताल समाज देवी–देवताओं के कथाऔं की चर्चा करने के लिये**– संताल समाज मे जितने भी देवी–देवता हैं सबकी चर्चा समाज मे लोकगीत और लोककथाओं के माध्यम से पीड़ी दर पीड़ी समाज में चली आ रही है। बिनती, समाज सिंगराई, मे देवी–देवताओं की लीला का वर्णना मिलता है। अतः समाज के लोग धार्मिक विश्वास को जिवीत रखने के लिये लोकसाहित्य की चर्चा करते हैं।

3ण **संताल समाज के इतिहास की चर्चा करने के लिये**– संताल समाज का इतिहास बहुत कम ही लिखित रुप मे मिलता है। इतिहास की घटनाऔं का वर्णना लोकसाहित्य;लोकगीत, लोककथाद्ध मे मिलता हैं। 'दॉसाय' नृत्य गीत एक इतिहास की घटना थी, जिसको याद रखने के लिये आज भी संताल समाज के लोग 'दॉसाय' नृत्य गीत करते हैं।

4ण **संताल जाति के अस्तित्व को जिवित रखने के लिये**–संताल जाति के लोगों का अपना समाज है, समाजिक व्यवस्था है, अपनी भाषा है, अपनी संस्कृति है, अपना धर्म है, अपने देवी–देवता है। इन सबको मिलाकर हम कह सकते हैं कि अपनी एक अलग पहचान है, और यह पहचान लोकसाहित्य मे है। अपनी इसी पहचान को जीवित रखने के लिये संताल समाज के लोग लोकसाहित्य की चर्चा करते हैं।

5ण **अपने मौखिक संविधान की चर्चा करने के लिये**– संताल जाति के लोगो की एक समाजिक व्यवस्था है, जिसे ष्मांझी पारगाना व्यवस्थाष कहते हैं। इनके गॉव के प्रधान ष्मांझीष कहलाते हैं। वे समाजिक रुप से समस्त ग्रामिणो के पिता होते हैं इसिलिये वे ष्मांझीबाबाष भी कहलाते हैं। गॉव के समस्त समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं न्ययायिक कार्यों मे मांझीबाबा की उपस्थिति अनिवार्य है। इनकी शासन व्यवस्था के मौखिक नियम कानुन भी है जो मौखिक रुप से ही समाज मे पीड़ी दर पीड़ी निरंतर चली आ रही है। अपने इसी मौखिक संविधान को जीवित रखने के लिये संताल समाज के लोग लोकसाहित्य की चर्चा करते हैं।

संताली लोकसाहित्य के लुप्त होने के कारण और उनको बचाने के उपाय

1. संताली लोकसाहित्य लुप्त हो हो रही है यह बात पुरी तरह से सच नही है। आधुनिक युग मे लोकसाहित्य की चर्चा पहले की तरह तो नही हो रही है किन्तु हो रही है। असल मे लोकसाहित्य का प्रचार प्रसार नही हो रहा है, जिसके कारण जनमानस तक नही पहुॅच रहा है। प्रिंट मिडिया विजुअल मिडिया मे संताली लोकसाहित्य को अनदेखा किया जा रहा है।
2. लोककलाकारों को महत्व न दिया जाना, जिसके कारण उन्हे काम करने मे प्रोत्साहन नही मिल रही है।
3. लोककलाकार अपनी कला की चर्चा समाज सेवा और मनोरंजन के लिये करते है, यह उनका पेशा नही है। अतः उन्हें अपनी जिवीका चलाने के लिये दुसरा कुछ काम करना पड़ता है। अपनी कला से अगर उन्हे रोजगार दिलाया जाय तो उन्हे जिवीका चलाने के लिये दुसरा कुछ नही करना पड़ेगा, वे अपना पुरा समय लोकसाहित्य की चर्चा मे लगा सकते है।
4. संताली भाषा का अपना ज्ण्टण् बिंददमस नही है, अपना त्कपव बिंददमस नही है। अभी तक संताली सिनेमा का विकास नही हो पाया है। जिसके कारण लोककलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन का मौका नही मिल रहा है। उन्हें रोजगार का अवसर नही मल रहा है। सरकार एवं निजी कंपनियों को इस बात पर गौर करना चाहिए। जब संताली भाषा का अपना ज्ण्टण् बिंददमसए त्कपव बिंददमसए खुल जायेंगे, और संताली सिनेमा का विकास होगा तब लोककलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन का मौका के साथ–साथ रोजगार का अवसर भी मिल जायेगा।
5. संताली भाषा के तरफ सरकार का विशेष ध्यान नही है जिसके कारण संताल बहुल क्षेत्र के ैबीववसए ब्वससमहमए न्दपअमतेपजल मे भी संताली भाषा साहित्य की पड़ाई ठीक से न होना। संताली भाषा साहित्य की शिक्षकों की नियुक्ति नही करना। कहीं–कहीं विद्यालय तो खो दिये गये हैं पर शिक्षकों की कमी के कारण विद्यालय बंद होने की स्थिति मे है। ब्वससमहमए न्दपअमतेपजल में भी थ्नसस ज्पउम ज्मंबीमत की बहुत कमी है। संताली भाषा के तरफ सरकार का जब ध्यान जायेगा, शिक्षकों की नियुक्ति होगी तब संताली भाषा साहित्य की चर्चा जोर–शेार से होगी। लोकसाहित्य भी संताली भाषा साहित्य का एक भाग है, अतः संताली लोकसाहित्य की भी चर्चा जोर–शेार से होगी।
6. संताल जाति के लोगों में शिक्षा एवं जागरुकता की बहुत कमी है, जिसे कारण वे सरकारी सहायताऔं का लाभ नही उठा पाते हैं। सरकार लोकसाहित्य की चर्चा के लिये सहायता देती है, इनके नाम पर कोई दूसरे लाभ उठाते हैं।
7. संताल जाति के लोगों का अपना समाज है, समाजिक व्यवस्था है, जिसे ष्मांझी पारगाना व्यवस्थाष कहते हैं। इस व्यवस्था के कुछ निर्वाचित पदाधिकारी होते हैं इन्ही पदाधिकारियों के द्वारा संताली लोकसाहित्य की चर्चा करवाने का जिम्मा होता है। अर्थात अनुष्ठान का आयोजन करने की जिम्मेदारी इन्ही पदाधिकारियों की होती है। ये पदाधिकारी अपना काम समाज के लिये स्वेच्छा से करते हैं । इनकी भी सबकी तरह परिवार होती है। इन्हें भी परिवार चलानें के लिये रोजगार की आवश्यकता होती है। इन्हे रोजगार के लिये अन्य काम करने पड़ते हैं। अतः अगर

सरकार इन पदाधिकारियों के लिये भत्ता की व्यवस्था करे तो वे अपना पुरा समय समाज को दे पायेगे और संताली लोकसाहित्य की भी चर्चा जोर–शोर से होगी।

References

1. झारखंड की जनजातियॉ, डॉ चर्तुभूज साहू, के के पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2002, (ISBN 978.81.87568.11.7), Page.45
2. संताली लोकसाहित्य, डॉ कृष्ण चन्द्र टुडू, संताली साहित्य परिषद्, रॉची, 2008ए च्ंहम.11
3. संताली लोकसाहित्य, डॉ कृष्ण चन्द्र टुडू, संताली साहित्य परिषद्, रॉची, 2008ए च्ंहम.12
4. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.८
5. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.131ए132
6. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.164
7. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.186
8. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.32
9. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.56
10. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005ए च्ंहम.227
11. संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, डॉ रतन हेम्ब्रम, माधा प्रकाशन, जाहरटोला, बारीडीह, जमशदपुर–17, 2005, Page-243,244
12. संताली लोककथा एक अध्ययन, डॉ धानेश्वर माझी, प्यारा केरकेटा फाउन्डेशन, रॉची, झारखंड, 2010, Page.96
13. UGC NET/SLET Sanjay Gupta & A.K. Singh, Danika Publishing Company, New Delhi, 2013, ISBN 81-89301-71-3, Page-2
14. UGC NET/JRF f"k{ा एवं भोध अभियोग्यता] Dr. Lal Jain & K.C.Wasist, Upkar Publication, Agra, 2013(Revised Edition)ISBN 978-81-7482-379-3, Page-3
15. UGC NET/JRF f"k{ा एवं भोध अभियोग्यता] Dr. Lal Jain & K.C.Wasist, Upkar Publication, Agra, 2013(Revised Edition)ISBN 978-81-7482-379-3, Page-3
16. UGC NET/JRF f"k{ा एवं भोध अभियोग्यता] Dr. Lal Jain & K.C.Wasist, Upkar Publication, Agra, 2013(Revised Edition)ISBN 978-81-7482-379-3, Page.3